१. बरषहिं जलद

– *गोस्वामी तुलसीदास*

चौपाई

घन घमंड नभ गरजत घोरा । प्रिया हीन डरपत मन मोरा ।।
दामिनि दमक रहहिं घन माहीं । खल कै प्रीति जथा थिर नाहीं ।।
बरषहिं जलद भूमि निअराएँ । जथा नवहिं बुध बिद्या पाएँ ।।
बूँद अघात सहहिं गिरि कैसे । खल के बचन संत सह जैसे ।।
छुद्र नदी भरि चली तोराई । जस थोरेहुँ धन खल इतराई ।।
भूमि परत भा ढाबर पानी । जनु जीवहिं माया लपटानी ।।
समिटि-समिटि जल भरहिं तलावा । जिमि सद्गुन सज्जन पहिं आवा ।।
सरिता जल जलनिधि महुँ जाई । होई अचल जिमि जिव हरि पाई ।।

दोहा

हरित भूमि तृन संकुल, समुझि परहि नहिं पंथ ।
जिमि पाखंड बिबाद तें, लुप्त होहिं सदग्रंथ ।।

चौपाई

दादुर धुनि चहुँ दिसा सुहाई । बेद पढ़हिं जनु बटु समुदाई ।।
नव पल्लव भए बिटप अनेका । साधक मन जस मिले बिबेका ।।
अर्क-जवास पात बिनु भयउ । जस सुराज खल उद्यम गयऊ ।।
खोजत कतहुँ मिलइ नहिं धूरी । करइ क्रोध जिमि धरमहिं दूरी ।।
ससि संपन्न सोह महि कैसी । उपकारी कै संपति जैसी ।।
निसि तम घन खद्योत बिराजा । जनु दंभिन्ह कर मिला समाजा ।।
कृषी निरावहिं चतुर किसाना । जिमि बुध तजहिं मोह-मद-माना ।।
देखिअत चक्रबाक खग नाहीं । कलिहिं पाइ जिमि धर्म पराहीं ।।
बिबिध जंतु संकुल महि भ्राजा । प्रजा बाढ़ जिमि पाई सुराजा ।।
जहँ-तहँ रहे पथिक थकि नाना । जिमि इंद्रिय गन उपजे ग्याना ।।

परिचय

जन्म : १५११, बाँदा (उ.प्र.)
मृत्यु : १६२३, वाराणसी (उ. प्र.)
परिचय : गोस्वामी तुलसीदास ने अवधी भाषा में अनेक कालजयी ग्रंथ लिखे हैं । आप प्रसिद्ध संत, कवि, विद्वान और चिंतक थे।

गोस्वामी जी संस्कृत के विद्वान थे । आपने जनभाषा अवधी में रचनाएँ लिखीं । आज से पाँच सौ वर्ष पूर्व जब प्रकाशन, दूरदर्शन, रेडियो जैसी सुविधाएँ नहीं थीं, ऐसे दौर में भी आपका ग्रंथ 'रामचरितमानस' जन-जन को कंठस्थ था । आपके द्वारा रचित महाकाव्य 'रामचरितमानस' को विश्व के लोकप्रिय प्रथम सौ महाकाव्यों में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है ।

प्रमुख कृतियाँ : 'रामचरितमानस' (महाकाव्य), 'कवितावली', 'विनय पत्रिका', 'गीतावली', 'दोहावली', 'हनुमान बाहुक', 'बरवै रामायण', 'जानकी मंगल' आदि।

दोहा

कबहुँ प्रबल बह मारुत, जहँ-तहँ मेघ बिलाहिं ।
जिमि कपूत के उपजे, कुल सद्‌धर्म नसाहिं ।।
कबहुँ दिवस महँ निबिड़ तम, कबहुँक प्रगट पतंग ।
बिनसइ-उपजइ ग्यान जिमि, पाइ कुसंग-सुसंग ।।

('रामचरितमानस के किष्किंधा कांड' से)

— ० —

पद्‌य संबंधी

प्रस्तुत पद्‌यांश गोस्वामी तुलसीदास रचित 'रामचरितमानस' महाकाव्य के किष्किंधा कांड से लिया गया है । यह पद्‌यांश चौपाई एवं दोहा छंद में है । यहाँ गोस्वामी जी ने वर्षा ऋतु में होने वाले परिवर्तनों का सुंदर वर्णन किया है । उन्होंने वर्षा के साथ-ही-साथ समाज की स्थिति, विविध गुणों-दुर्गुणों को भी दर्शाया है ।

उपरोक्त प्रसंग सीताहरण के बाद का है। श्री राम-लक्ष्मण, सीता जी की खोज में भटक रहे हैं । सीता जी के बिना श्रीराम व्याकुल हैं। रामचंद्र जी कहते हैं, ''आसमान में बादल घोर गर्जना कर रहे हैं। पत्नी सीता के न होने से मेरा मन डर रहा है। आकाश में बिजली ऐसे चमक रही है जैसे दुष्ट व्यक्ति की मित्रता स्थिर नहीं रहती... ।''

शब्द संसार

घोरा वि.(हिं.अवधी) = भयंकर
डरपत क्रि.(हिं.अवधी) = डरना
खल वि.(सं.) = दुष्ट
जथा क्रि.वि. (हिं.अवधी) = यथा, जैसे
थिर वि. (हिं.अवधी) = स्थिर
नियराई क्रि. (हिं.अवधी) = नजदीक आना
नवहिं क्रि.(हिं.अवधी) = झुकना
बुध पुं.(सं.) = विद्‌वान
तोराई क्रि. (हिं.अवधी) = तोड़कर
ढाबर वि. (हिं.अवधी) = मटमैला
लपटानी क्रि. (हिं.अवधी) = लिपटना
जिमि क्रि.वि.(हिं.वि.) = जैसे
बटु पुं.सं.(सं.) = बालक
विटप पुं.सं.(सं.) = पेड़, वृक्ष
अर्क पुं.सं.(सं.) = मदार (मंदार) का वृक्ष
उद्‌यम पुं.सं.(सं.) = उद्‌योग
कतहुँ-अव्यय.(हिं.अवधी) = कहीं
सोह क्रि.(हिं.अवधी) = सुशोभित होना
दंभिन्ह वि.(हिं.अवधी) = घमंडी
निरावहिं क्रि.(हिं.अवधी) = निराना (खेती की प्रक्रिया)
तजहिं क्रि. (हिं.अवधी) = त्यागना
मद पुं.सं.(सं.) = घमंड
चक्रबाक पुं.सं.(हिं.अवधी) = चक्रवाक पक्षी
भ्राजा क्रि.(सं.) = शोभायमान होना
मारुत पुं.सं.(सं.) = हवा
नसाहिं क्रि.(हिं.अवधी) = नष्ट होना
निबिड़ वि.(हिं.अवधी) = घोर, घना
बिनसइ क्रि.(हिं.अवधी) = नष्ट होना

स्वाध्याय

✻ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) कृति पूर्ण कीजिए :

पद्यांश में आए प्राकृतिक जल स्रोत

(२) निम्न अर्थ को स्पष्ट करने वाली पंक्तियाँ लिखिए :

१. संतों की सहनशीलता -------

२. कपूत के कारण कुल की हानि -------

(३) तालिका पूर्ण कीजिए :

इन्हें	यह कहा है
(१) ------	बटु समुदाय
(२) सज्जनों के सद्‌गुण	------

(४) जोड़ियाँ मिलाइए :

	'अ' समूह	उत्तर		'ब' समूह
१.	दमकती बिजली		अ	दुष्ट की मित्रता
२.	नव पल्लव से भरा वृक्ष		ब	साधक के मन का विवेक
३.	उपकारी की संपत्ति		क	ससि संपन्न पृथ्वी
४.	भूमि की		ड	माया से लिपटा जीव

(५) इनके लिए पद्यांश में प्रयुक्त शब्द :

बादल

ग्रह

उपग्रह

पेड़

पौधा

पत्ते

(६) प्रस्तुत पद्यांश से अपनी पसंद की किन्हीं चार पंक्तियों का सरल अर्थ लिखिए ।

उपयोजित लेखन

कहानी लेखन :

'परहित सरिस धर्म नहिं भाई' इस सुवचन पर आधारित कहानी लेखन कीजिए ।

C2FBIS